ISBN : 978-93-92568-23-7

वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों में समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि

डॉ. मोती लाल शाकार

वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों में समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि

लेखक

डॉ. मोती लाल शाकार

(एम.ए. भाषाविज्ञान, हिंदी, संस्कृत, इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति, बी.एड., पी.एच–डी. भाषाविज्ञान)

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Publisher

Aditi Publication, Raipur, Chhattisgarh, INDIA

वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों में समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि

2022
Edition - **01**

लेखक
डॉ. मोती लाल शाकार
(एम.ए. भाषाविज्ञान, हिंदी, संस्कृत, इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति, बी.एड., पी.एच–डी. भाषाविज्ञान)
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ISBN : **978-93-92568-23-7**

Copyright© All Rights Reserved
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of original publisher.

Price : Rs. **540/-**

Publisher and Printer:
Aditi Publication,
Opp. New Panchajanya vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

प्राक्कथन

जीवन एक संघर्ष है। जीवन के इस संघर्ष को उपन्यास द्वारा अत्यंत आकर्षण ढंग से दर्शाया जा सकता है। अतः उपन्यास जीवन का दूसरा नाम है। उपन्यास साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। समाज उपन्यास में इस प्रकार व्याप्त रहता है, जिस प्रकार दूध में मक्खन। जिस प्रकार मक्खन रहित दूध का कोई स्वाद नहीं होता, उसी प्रकार समाज के बिना उपन्यास अरुचिकर होता है। जिस प्रकार पानी के बिना सरिता का, प्राणों के बिना शरीर का, मणि बिन फणी का, कर बिन करिवर का, नर बिन नारी का, सवार बिन तुरंग का, सुगंधी बिन फूल का, उष्णता बिना पावक का कोई मूल्य नहीं है, उसी प्रकार समाज के बिना उपन्यास का कोई मूल्य नहीं है। इस प्रकार वर्तमान युग में साहित्य के अध्ययन के साथ–साथ उपन्यासों का अध्ययन भी आवश्यक हो गया है, क्योंकि उपन्यासों के द्वारा ही जीवन को समझा जा सकता है। आधुनिक युग के साहित्य के अध्ययन के साथ ही समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन भी आवश्यक है, क्योंकि उपन्यास समाज का दर्पण है एवं उपन्यासों में समाज को जिया जाता है। समाज से जुड़ी प्रत्येक परिस्थिति का व्यवहृत आकलन उपन्यास में प्रस्तुत किया जाता है।

प्रस्तुत ग्रंथ 'वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों में समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि' जिसे समाजभाषाविज्ञान के विभिन्न पक्षों को उभारने के उद्देश्य से पाँच अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अध्याय में 'भूमिका' के अंतर्गत वृंदावन लाल वर्मा के जीवन, उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व के प्रेरणास्रोत के साथ–साथ कृतित्त्व पर विहंगम दृष्टि डालने का विनम्र प्रयास किया गया है। तत्पश्चात् उपन्यास का प्रादुर्भाव तथा इतिहास पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। साथ ही उपन्यास के महत्त्व को रेखांकित किया गया

है, जिसमें उपन्यास के न केवल सामाजिक महत्त्व अपितु उसके समाजभाषावैज्ञानिक महत्त्व को भी उदघृत किया गया है। अंत में कार्य–पद्धति, कार्य का स्वरूप तथा कार्य की सीमाओं को स्पष्ट किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत 'सामाजिक–विवेचन' की समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि से देखने एवं परखने का प्रयास किया गया है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक हैं। समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन के लिए उपन्यास में परिलक्षित समाज एवं संस्कृति का प्रत्यक्षीकरण आवश्यक है। अतः इस अध्याय के अंतर्गत उपन्यासों में परिलक्षित संस्कृति, समाज में स्तरीकरण, धार्मिक आस्थाएँ, समाज की पारिस्थितिक संरचना, सामाजिक संरचना के साथ ही आर्थिक संरचना, लोक–कला एवं लोक–साहित्य को स्पष्ट किया गया है। उपर्युक्त गिनाए गए विविध आयामों के समन्वय से ही एक समाज की उन्नत तस्वीर विवेच्य उपन्यासों के माध्यम से हमारे सामने उभरती है।

तृतीय अध्याय में 'समाजभाषाविज्ञान की सैद्धांतिक पीठिका' के अंतर्गत भाषा और समाज के पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट किया गया है। भाषा जहाँ समाज में उत्पन्न होती है, वहीं नियंत्रित और विकसित भी होती चलती है, साथ–ही–साथ वह समाज को भी नियंत्रित और विकसित करती है। इसी अभिन्न अंतरंगता को वक्ता एवं श्रोता के द्वारा विवेच्य उपन्यासों में पात्रों की भाषा के संदर्भ में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसी अध्याय के अंतर्गत उपन्यासों का विषय–वस्तु, स्थान, काल के साथ–ही साथ प्रयुक्त कोड एवं भाषा–शैली को स्पष्ट किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत 'भाषा और सामाजिक परिवर्त्य' को लिया गया है, जिसमें भाषा को सामाजिक संदर्भ में परिभाषित करते हुए उसे अलग–अलग अवस्था में उसका समाज में किस

प्रकार व्यवहार एवं उपयोग होता है. उस पर प्रकाश डाला गया है। विवेच्य उपन्यासों में भाषा और सामाजिक परिवर्त्य को लिंग, क्षेत्र, जाति, वर्ग, पहचान, परिस्थिति, प्रवृत्ति आदि के आधार पर विश्लेषित किया गया है।

पंचम अध्याय 'स्विचन और विकल्पन' का है। इस अध्याय में उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा का अध्ययन समाजभाषाविज्ञान की दृष्टि से किया गया है। समाजभाषाविज्ञान के अंतर्गत उपन्यासों में प्रयुक्त कोड, कोडविकल्पन, विविध कोड प्रयोगों का विवेचन किया गया है। इसी के साथ उपन्यासों में प्रयुक्त कोड का समाजभाषाविज्ञान की दृष्टि से क्या औचित्य है ? इसे विवेच्य उपन्यासों के संदर्भ में स्पष्ट किया गया है।

'उपसंहार' के अंतर्गत ''वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों में समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि'' का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। परिशिष्ट–1 के अंतर्गत विशिष्ट शब्दों, जिनका प्रयोग वर्मा जी ने उपन्यासों में किया है, उसे अर्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है। साथ ही परिशिष्ट–2 में उपन्यासों में प्रयुक्त प्राचीन स्थान एवं नगरों, नदी, पर्वत, देशी राज्यों एवं विदेशों को दर्शाया गया है। परिशिष्ट–3 में उपन्यासों में प्रयुक्त गीत को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अंत में आधार ग्रंथ–सूची और सहायक ग्रंथ–सूची का समावेश किया गया है।

(डॉ. मोती लाल शाकार)

कृतज्ञता ज्ञापन

किसी भी मनुष्य को सफलता स्वयं अकेले के प्रयत्नों से नहीं मिलती, बल्कि उस सफलता के पीछे कई अदृश्य हाथ होते हैं, जिनके मार्गदर्शन व सहयोग के सहारे वह सफलता की सीढ़ी तय करता है। यह सत्य है कि वह सफल मनुष्य कहीं अधिक प्रयास तथा कठिन परिश्रम करता है, जो आवश्यक भी है, लेकिन उसके प्रयास तथा कठिन परिश्रम को प्रोत्साहन व सही दिशा देने वाला मार्गदर्शक कहलाता है।

वृंदावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में मेरी रुचि प्रारंभ से रही है। उनके उपन्यासों के प्रति मेरे मन में विशेष आकर्षण रहा है। मैंने अपनी सुरुचि के अनुरूप चिंतन–मनन करने के उपरांत 'वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों में समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि' विषय पर मुझे परिष्कृत रूप में उपन्यास–साहित्य पर यह ग्रंथ लिखने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

आभार की अभिव्यक्ति एक दुष्कर कार्य होता है, किंतु उसे बिना व्यक्त किए संपन्न कार्य की अपूर्णता महसूस होती है। मनुष्य जब किसी नवीन पद की ओर अग्रसर होता है, तो उसे उचित मार्गदर्शन, उत्साह और सहयोग की आवश्यकता होती है।

सर्वप्रथम मैं वीणावादिनी माँ सरस्वती के चरण–कमलों में नमन अर्पित करता हूँ, जिनकी ही कृपा दृष्टि के फलस्वरूप इस ग्रंथ का लेखन कार्य करने में सामर्थ्य आया।

"गुरु मिलन को जाइए तज माया अभिमान,
ज्यों–ज्यों पग आगे बढ़हे कोटिन यज्ञ समान।।

उदारता की प्रतिमूर्ति भाषाविज्ञान के विद्वान मनीषी गुरूवर डॉ. व्यास नारायण दुबे, पूर्व विभागाध्यक्ष का सदैव ऋणी हूँ जिनकी

प्रेरणा से यह लेखन कार्य पूर्ण हो सका जो मुझे इस ग्रंथ के प्रकाशन हेतु निरंतर प्रेरित करते हुए अपने अमूल्य सुझाव प्रदान करते रहे।

गुरु हमेशा वंदनीय होते हैं, जिनके उपदेशों से शिष्य का मार्ग प्रशस्त एवं अवलोकित होता है। उन्होंने समय–समय पर मेरी हौसला बढ़ाकर, निराशा के दौर में आशा की सुनहरी किरणें दिखाकर कुंठित हुए बोझिल मेरे आत्म–विश्वास को ओजपूर्ण वक्तव्य से प्रभावित कर लगन से कार्य करने की प्रेरणा देते रहे। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन मात्र शब्दों का मायाजाल होगा, अतएव हमेशा मेरा शीश श्रद्धेय गुरुदेव के पावन चरणों में नतमस्तक रहेगा

"प्रेरित भावों से नवनिर्मित,
अल्पश्रम का अनुपम प्रतिफल।
समर्पित आज उन्हीं को कर दूँ
जैसे सरिता सागर का जल।"

भाषाविज्ञान के विद्वान मनीषी गुरूवर डॉ. चित्तरंजन कर एवं डॉ. (श्रीमती) शैल शर्मा, विभागाध्यक्ष, साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर ने ग्रंथ प्रकाशन के लिए अनूठी प्रेरणा का आधार स्तंभ बना, जिन्होंने मुझे समय–समय पर ज्ञानवर्धक परामर्श दिए एवं मार्गदर्शन किया मैं उनके आभारी हूँ।

मैं उन लेखकों एवं विद्वानों के प्रति आभारी हूँ, जिनके पुस्तकों एवं लेखों के माध्यम से मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहायता मिली है।

अंत में मैं प्रेरणा स्रोत अपने पूज्य पिताजी श्री घनाराम सोनकर, पूजनीय माता जी श्रीमती कस्तुरी सोनकर, चाचा श्री कृपाराम शाकार, पुहपराम इन्दौरिया, भैया ओमप्रकाश शाकार, श्वसुर महेतरू राम सोनकर, सास श्रीमती सोनारिन सोनकर, पत्नी श्रीमती भुनेश्वरी सोनकर, स्नेहीजनों का आभारी हूँ, जिनके आशीर्वाद

एवं प्रेरणा मुझे निरंतर आगे बढ़ाने में सहायक रहा।

ग्रंथ मुद्रण एवं कार्य कुशलता के लिए शीतल यादव, अदिति प्रकाशन के प्रकाशक अजय कुमार अग्रवाल विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं उन समस्त स्नेहीजनों की आभारी हैं, जिन्होंने किसी न किसी रूप में मुझे इस कार्य को करने के लिए प्रेरित करते रहे एवं साथ–ही–साथ सहयोग प्रदान किए। मेरा ग्रंथ लिखने का कार्य एक दृष्टि से यहाँ समाप्त हो रहा है, किंतु मेरा लक्ष्य इस दिशा में आगे और भी कार्य करने का है।

अंततः मैं अपने कृतज्ञता को निम्न शब्दों में व्यक्त करना चाहूँगा क्योंकि "अपनों का अपनों पर कोई भार नहीं होता, इसीलिए उनका कोई आभार नहीं होता।"

(डॉ. मोती लाल शाकार)

अनुक्रमणिका

क्र.	अध्याय	पृ.क्र.
01.	**प्रथम अध्यायः प्रस्तावना** 1.0 भूमिका; 1.1. ऐतिहासिक उपन्यासः प्रादुर्भाव; 1.1.1. ऐतिहासिक उपन्यास का प्रारंभ, 1.1.1.1. आरंभिक युग, 1.1.1.2. विकास युग, 1.1.2. उपन्यास उत्पत्ति, 1.1.3. ऐतिहासिक उपन्यास की परिभाषा, 1.1.4. ऐतिहासिक उपन्यासः वर्गीकरण, 1.1.4.1. ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर, 1.1.4.1.1. कल्पना प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास, 1.1.4.1.2. इतिहास प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास, 1.1.4.1.3. ऐतिहासिक उपन्यास, 1.1.5. विषय प्रतिपादन के आधार पर ऐतिहासिक उपन्यास. 11. प्रेम और घटना प्रधान, 1.1.5.2. इतिहास प्रधान, 1.1.5.3. राजनीति तथा राष्ट्र प्रधान, 1.1.5.4, समस्या प्रधान, 1.1.5.5. संस्कृति प्रधान, 1.1.5.6. मनोवैज्ञानिक घटना प्रधान, 1.1.6. ऐतिहासिक उपन्यासकारों में वृंदावन लाल वर्मा का स्थान, 1.1.7. विवेच्य उपन्यासों का विषय–वस्तु, 1.2. ऐतिहासिक उपन्यास का महत्त्व; 1.3. ऐतिहासिक उपन्यासों में आंचलिकता; 1.4. वृंदावन लाल वर्माः व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व; 1.4.1. व्यक्तित्त्व, 1.4.1.1. वृंदावन लाल वर्मा का जीवन–वृत्त, 1.4.1.2. जन्म और कुल, 1.4.1.3. बाल्यकाल और शिक्षा, 1.4.1.4. संगीत और शिकार, 1.4.1.5. जीवन और प्रेरणा, 1.4.1.6. अपनी कहानी, 1.4.1.7. ऐतिहासिक क्षेत्र, 1.4.1.8. निधन, 1.4.1.9. विशिष्ट स्थान, 1.4.2. कृतित्त्व, 1.4.2.1. ऐतिहासिक उपन्यास, 1.4.2.2. सामाजिक उपन्यास, 1.4.2.3. कहानियाँ, 1.4.2.3.1. सामाजिक कहानियाँ, 1.4.2.4. नाटक और एकांकी. 1.4.2.5. गद्य–काव्य, 1.4.2.6, वृंदावन लाल की	01

	रचनाएँ, 1.4.2.7. अन्य रचनाएँ, 1.5. समाजभाषाविज्ञानः परिचय; 1.6. कार्य–पद्धति; 1.7. कार्य का स्वरूप; 1.8. कार्य की सीमाएँ; संदर्भ ग्रंथ–सूची।	
02.	**द्वितीय अध्यायः सामाजिक विवेचन** 2.0 भूमिका; 2.1. समाज में परिलक्षित संस्कृति 2.1.1. मनोवृत्ति, 2.1.2. पारस्परिक संबंध, 2.13. आधुनिक भाव–बोध, 2.1.3.1. नई और पुरानी पीढ़ी के बीच मतभेद, 2.1.3.2. समय–शक्ति के समक्ष मनुष्य नगण्य, 2.1.3.3. भावना और यथार्थ में घुटती नारी की अंतः पीड़ा, 2.2. संस्कृति की पारिस्थितिक संरचना 2.2.1. संस्कृति, 2.2.2. संस्कृति का अर्थ, 2.2.3. संस्कृति की परिभाषा, 2.2.4. परस्पर द्वेष, 2.2.5. राष्ट्रीय गौरव का उन्मेष, 2.2.6. इतिहास के प्रति न्याय–भावना, 2.3. सामाजिक संरचना; 2.3.1. सामाजिक संरचना की परिभाषा, 2.3.2. समाज का अर्थ, 2.3.3. समाज की परिभाषा, 2.3.4. समाज में नारी की स्थिति, 2.4. समाज में स्तरीकरण; 2.4.1, स्तरीकरण की परिभाषा, 2.4.1.1. लिंग के आधार पर स्तरीकरण, 2.4.1.2. आयु के आधार पर स्तरीकरण, 2.4.1.3. जन्म के आधार पर स्तरीकरण, 2.4.1.4. आर्थिक आधार पर स्तरीकरण, 2.4.1.5, राजनैतिक आधार पर स्तरीकरण, 2.5. धार्मिक आस्थाएँ, 2.5.1. धर्म का अर्थ, 2.5.2. धर्म की परिभाषा, 2.5.3. धर्म का महत्त्व, 2.6. आर्थिक संरचना; 2.7. लोक–कला एवं लोक–साहित्य; 2.7.1. लोककला, 2.7.2. लोक–साहित्य, 2.8. निष्कर्ष; संदर्भ ग्रंथ–सूची।	**71**
03.	**तुतीय अध्यायः समाजभाषाविज्ञान की सैद्धांतिक पीठिका** 3.0 भूमिका; 3.1, भाषा और समाज का पारस्परिक	**173**

	संबंधः 3.2. वक्ता–श्रोता; 3.2.1, वक्ता–श्रोता का संबंध, 3.2.2. वक्ता की स्थिति, 3.2.3. श्रोता की स्थिति, 3.3. विषय–वस्तु; 3.4. स्थान; 3.5. काल, 3.6. कोड, 3.7. शैली; 3.7.1, शैली की परिभाषा, 3.7.2. शैली के प्रकार, 3.7.2.1. औपचारिक शैली, 3.7.2.2, अनौपचारिक शैली, 3.8. निष्कर्ष, संदर्भ ग्रंथ–सूची ।	
04.	**चतुर्थ अध्यायः भाषा और सामाजिक परिवर्त्य** 4.0 भूमिका; 4.1, अवस्था, 4.1.1. बाल्यावस्था, 4.1.2. युवावस्था, 4.1.3. प्रौढ़ावस्था, 4.1.4. वृद्धावस्था, 4.2. लिंगः 4.3. क्षेत्र; 4.4. जाति। 4.4.1. उच्च जाति, 4.4.2. निम्न जाति, 4.5. वर्ग, 4.5.1. उच्च वर्ग, 4.5.2. निम्न वर्ग, 4.6. पहचान, 4.7. परिस्थिति; 4.8. प्रवृत्ति; संदर्भ ग्रंथ–सूची।	**236**
05.	**पंचम अध्यायः स्विचन और विकल्प** 5.0 भूमिका; 5.1. विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त कोड; 5.1.1. विवेच्य उपन्यासों का भाषाई कोश, 5.1.1.1. भाषिक अंतर. 5.1.1.2. भाषाई प्रयोग, 5.1.1.2.1. मानक हिंदी का भाषाई प्रयोग, 5.1.1.2.2. संस्कृत का भाषाई प्रयोग, 5.1.1.2.3. उर्दू का भाषाई प्रयोग, 5.1.1.2.4. बुंदेली का भाषाई प्रयोग, 5.1.1.2.5. अँगरेज़ी का भाषाई प्रयोग, 5.1.1.2.6. मराठी का भाषाई प्रयोग, 5.1.1.2.7. ब्रज का भाषाई प्रयोग, 5.2. कोड विकल्पन; 5.2.1, प्रयोक्ता सापेक्ष विकल्पन, 5.2.1.1. क्षेत्रीय शैली, 5.2.1.2. सामाजिक शैली, 5.2.2. प्रयोग सापेक्ष विकल्पन, 5.2.2.1. प्रयुक्ति सापेक्ष विकल्पन, 5.2.2.1.1. वार्ता क्षेत्र, 5.2.2.1.2. वार्ता प्रकार, 5.2.2.1.3. वार्ता शैली, 5.2.2.2. भूमिका सापेक्ष विकल्पन, 5.2.2.2.1. निर्वाह प्रविधि, 5.2.2.2.2. वृत्तित्व प्रविधि, 5.3. विविध कोड प्रयोगों का विवेचन; 5.4. विवेच्य उपन्यासों	**300**

	में प्रयुक्त कोड का समाजभाषाविज्ञान की दृष्टि से औचित्य, संदर्भ ग्रंथ–सूची।	
06.	**उपसंहार**	**360**
07.	**परिशिष्ट** 1. उपन्यासों में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों का संकलन, जिसे अर्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है। 2. उपन्यासों में प्रयुक्त गीत एवं काव्य–रूप का संकलन। 3. उपन्यासों में प्रयुक्त विशिष्ट स्थान–नाम। 4. उपन्यासों में प्रयुक्त पर्वतों के नाम। 5. उपन्यासों में प्रयुक्त देशी राज्य। 6. उपन्यासों में प्रयुक्त विदेशी गणराज्य। 7. उपन्यासों में प्रयुक्त नदियों के नाम।	**375**
08.	**ग्रंथ–सूची** आधार ग्रंथ–सूची सहायक ग्रंथ सूची (हिंदी) सहायक ग्रंथ–सूची (अँगरेज़ी) प्रकाशित पुस्तकें पत्र–पत्रिकाएँ शब्द कोश	**398**

डॉ. मोती लाल शाकार

जन्म	–	30 जनवरी, 1975
जन्म स्थान	–	ग्राम – आसरा, पो. – खेरथा बाजार, तह. डौंडीलोहारा, जिला–बालोद (छत्तीसगढ़)
पिता	–	श्री घना राम सोनकर
माता	–	श्रीमती कस्तुरी सोनकर
संगिनी	–	श्रीमती भुनेश्वरी सोनकर
शिक्षा	–	एम.ए. भाषाविज्ञान, हिंदी, संस्कृत, इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति, बी.एड., पीएच.डी. भाषाविज्ञान
सहायक प्राध्यापक	–	दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर
स्वरदूत	–	9893285651

Aditi Publication
Opp. New Panchjanya Vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Dist.- Raipur-492001, Chhattisgarh
shodhsamagam1@gmail.com, +91 94252 10308

₹ 540